ओएनजीसी विदेश लि.

भारत सरकार का उपक्रम

आधारशिला

2020-2021

ओएनजीसी विदेश लिमिटेड, नई दिल्ली

: संरक्षक :

श्री आलोक कुमार गुप्ता

प्रबंध निदेशक

: उप-संरक्षक :

श्री गिरिजा शंकर चतुर्वेदी

निदेशक अन्वेषण

: परामर्श :

श्री साकेत गुप्ता

एचसीएसएस - मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

श्री प्रदीप जैन

उप-महाप्रबंधक, मानव संसाधन

: संपादक :

सुश्री प्रीति चौधरी

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

: सहयोग :

श्री अमरेन्द्र सिंह

महाप्रबंधक - निगमित संचार समूह

पत्रिका के प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इसमें संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

- प्रबंध निदेशक का संदेश 1
- निदेशक (वित्त) का संदेश 2
- निदेशक (अन्वेषण) का संदेश 3
- संपादक की कलम से 4
- राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका 5
- ''कोरोना'' आओ मिलकर इसका सामना करें 10
- बन्धन 17
- यात्रा संस्मरण – मुक्तेश्वर 22
- स्वतंत्रता की कीमत शाश्वत सतर्कता है 27
- आलेख 29
- एक लड़की–कविता 30
- लॉकडाउन : एक मंज़र 31
- महादेव तांडव 34
- कलयुग की संतान 36
- राजस्थान की संस्कृति एवं कला साहित्य 38

प्रबंध निदेशक का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि गृहपत्रिका 'आधारशिला' के प्रकाशन की श्रृंखला मेँ एक और पत्रिका इस वर्ष के अंक के रूप में जुड़ रही है।

मानव समाज की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक प्रमुख उपलब्धि है– भाषा। इसके द्वारा ही मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। भाषा लोगों को संपर्क सूत्र से जोड़ने का कार्य करती है। भारत में संपर्क भाषा का गौरव हिन्दी भाषा को प्राप्त है। इसके साथ ही यह हमारे देश की प्रथम राजभाषा एवं सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा भी है।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें और भारत सरकार द्वारा हिन्दी भाषा के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपना पूर्ण योगदान दें।

पत्रिका प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(आलोक कुमार गुप्ता)
प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ओएनजीसी विदेश लिमिटेड द्वारा हिन्दी की गृहपत्रिका 'आधारशिला' का प्रकाशन किया जा रहा है ।

आज तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा का स्वरूप काफी व्यापक हो चुका है। अब यह केवल व्याकरण, साहित्य और अनुवाद की भाषा नहीं रह गई है बल्कि शिक्षण, व्यापार, रोजगार और यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की अभिव्यक्ति की एक प्रमुख भाषा बनकर सुशोभित हो रही है। वैश्वीकरण के दौर ने भाषा की महत्ता को और अधिक बढ़ा दिया है।

वर्तमान परिवेश में राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा दायित्व है। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करेंगे और राजभाषा के प्रचार / प्रसार में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

पत्रिका प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित।

(विवेकानन्द)
निदेशक (वित्त)

निदेशक (अन्वेषण) का संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ओएनजीसी विदेश कार्यालय द्वारा गृहपत्रिका 'आधारशिला' के नये अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा भावों की संवाहिका होती है। सांस्कृतिक विविधता से सम्पन्न हमारे देश में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसने पूरे देश को भाषा रूपी एकता के सूत्र में पिरोया है। आज पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है परंतु तकनीकी काम–काज से संबंधित क्षेत्रों में गति अभी भी काफी मंद है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम कार्यालयीन कार्यों में आसान और सरल शब्दों का प्रयोग करें जिससे स्वाभाविक रूप से कार्मिकों में हिन्दी में काम करने के प्रति रुचि जागृत हो सके।

अतः हम सभी का यह कर्तव्य है कि सरकारी अपेक्षाओं के अनुरूप कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें, जिससे ओएनजीसी विदेश कार्यालय तकनीकी क्षेत्र के साथ ही राजभाषा के क्षेत्र में भी अपनी पताका लहरा सके।

'आधारशिला' पत्रिका के सम्पादन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(गिरिजा शंकर चतुर्वेदी)
निदेशक (अन्वेषण)

संपादकीय

संपादकीय
संपादकीय
संपादकीय

ओएनजीसी विदेश कार्यालय द्वारा कई वर्षों से 'आधारशिला' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस श्रृंखला में वित्तीय वर्ष 2020–21 की 'आधारशिला' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस अंक में गृहपत्रिका को नया स्वरूप देने तथा विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों का समावेश करने का भरपूर प्रयास किया है।

हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि कार्मिकों ने इस पत्रिका में रूचि लेते हुए अपनी रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजी हैं, जिससे यह स्पष्ट है कि कार्मिकों का राजभाषा के प्रति रुझान बढ़ रहा है।

हमें आप सभी के मार्गदर्शन एवं सहयोग की अपेक्षा रहेगी जिससे 'आधारशिला' का स्तर निरंतर बढ़ता रहे।

(प्रीति चौधरी)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

डॉ. सुमीत जैरथ,
सचिव (राजभाषा)

राजभाषा अर्थात राज–काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम–जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत–मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने–कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमो/बैंकों आदि

में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रति–दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति–विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (थ्पतम पद जीम इमससल) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारीध्कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारिया/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने–कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग–अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई–प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत–स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC&Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it)* हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे–धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व– माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतरू ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंका/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी

में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार–प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह–पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभानवित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ–साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय–समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच–बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में

बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चौन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों – कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

सचिव
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

"कोरोना" आओ मिलकर इसका सामना करें

श्याम सुन्दर
उप–महाप्रबंधक (प्रोग्रामिंग)

आज का मानव जिसके पूर्वजों ने पत्थर से पत्थर रगड़ कर अग्नि का अविष्कार किया। वृक्षों के तने की गोलाकार लकड़ी को काटकर पहिए का निर्माण किया। कहीं ना कहीं वह आज दिन–रात उसी पहिए की गति को अत्यधिक गतिमान बनाने में ही संलग्न है। आज का मानव इतना सक्षम है कि आज उसके कहने से ही हवा की दिशा और दशा बदलती है, वातावरण का तापमान भी चढ़ता उतरता है। वह जल, थल एवं नभ में समान रूप से विचरण कर सकता है। उनके विकास का दायरा अनंत है असीम है। परंतु आखिर प्रत्येक धारा अपनी दोनों कूलों के बीच बह कर ही अपने गंतव्य तक पहुंचती है। सीमा से बाहर बहने पर उसका अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है। आज विज्ञान ने उस मानव को अंतःस्पर्शी इंद्रलोक के सूक्ष्म सौंदर्य वैभव में विचरण करने का अवसर प्रदान किया है। उसे सुनहरे अमरलोक का आनंद वैभव प्रदान किया है। भौतिकता से भरी हुई समस्त वस्तु एवं संसाधनों का सैलाब एकत्रित कर दिया है। प्रत्येक सिक्के के दो पहलू भी हैं। आज हम प्रकृति से हम दूर जा रहें हैं। क्षिति, जल, पावक, गगन व समीर जैसे पंच तत्वों पर प्रहार भी किया है। चर–अचर, जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों का संहार भी किया है। आज विनाश अपने जबड़े फाड़े खड़ा हुआ है और मानव उससे बचने के लिए उसके जबड़े की ओर ही भागता हुआ चला आ रहा है।

प्रगति के इन सोपानों के बीच विश्व गुरु बनने के होड़ में वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा के बीच एक अज्ञात विषाणु ने अपने पांव पसारे जिसके विषय में अभी यह नहीं है कि वह स्वतः फैला है कि उसे फैलाया गया है। यह आज भी रहस्य का विषय बना हुआ है। जिसने देखते ही देखते संपूर्ण विश्व को अपने चपेट में ले लिया है। जिसे कोरोना महामारी का नाम दिया है।

कोरोना वायरस के संक्रमण का लक्षण और पहचान

कोरोना वायरस बीमारी के पता चलने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बुखार, सूखी खांसी, सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या इसके प्रमुख और प्रारंभिक लक्षण है। शुरू में यह आम सर्दी जुकाम जैसा प्रतीत होता है पर जांच के बाद ही यह पता लगाया जा सकता है कि यह कोरोन है या नहीं। छींक आने पर व्यक्ति के अंदर से निकले छींक के कणों के कारण यह हवा में फैल जाते हैं, और उसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को यह संक्रमण आसानी से हो सकता है।

यह बेहद खतरनाक संक्रमण है जो कि आमतौर पर दिखाई नहीं देता है, और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से यह संक्रमण फैलता है। भारत में यह संक्रमण पहली बार फरवरी – 2000 में पाया गया, और आज यह संक्रमण तेजी से फैल रहा है। इसे लेकर हमें बहुत सावधान रहने की जरुरत है, और जितना हो सके लोगों के संपर्क में आने से बचे और खुद को और अपने परिवार को सुरक्षित रखे।

इस वायरस का शिकार ज्यादातर 55–60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में अधिक पाया गया है। अक्सर वो व्यक्ति जो किसी पुराने रोग जैसे मधुमेह, गुर्दे का रोग या दिल की बीमारी जैसी समस्या से पीड़ित है उस पर इस संक्रमण का असर अधिक है। इस संक्रमण से प्रभावित व्यक्ति का पता चलने के बाद उसे चिकित्सा सेवा के लिए औरों से अलग बनाएं गए कोविड अस्पतालों में इसका संपूर्ण इलाज किया जाता है।

◆ किसी संक्रमित व्यक्ति को आम लोगों से अलग या खास तौर पर बनाए गए कोविड अस्पतालों में रखा जाना चाहिए।

◆ कोरोना वायरस की कोई ठोस दवा या वैक्सिन अभी तक खोज नहीं की गई है, परंतु इससे प्रभावित व्यक्ति को इस वायरस से लड़ने और उसके असर को कम करने की दवा मरीजों को दी जाती है।

◆ तमाम देशों के वैज्ञानिक और उनकी टीम इस वायरस के वैक्सिन या दवा बनाने की कोशिश में प्रयत्नशील है।

◆ प्रभावित व्यक्ति को, जब तक वह पूर्ण स्वस्थ न हो जाए, सबसे अलग रखना चाहिए और आम लोगों के संपर्क से दूर रखना चाहिए।

<u>संक्रमण से कैसे बचें</u>

विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार इस संक्रमण से बचने के लिए कुछ विशेष दिशा निर्देश जारी किये गए हैं।

◆ एक दूसरे के संपर्क में आने से बचें और दो गज की सामाजिक दूरी से बनाए रखे।

◆ बाहर निकलते समय मास्क का इस्तेमाल अवश्य करे।

◆ समय–समय पर कम से कम 20 सेकन्ड तक अपने हाथों को अच्छे से धोएं।

◆ खांसते या छींकते समय अपने मुंह और नाक को अच्छी तरह से ढ़ंके।

◆ एल्कोहल युक्त सेनेटाइजर का इस्तेमाल करें।

◆ बहुत जरुरी होने पर ही घर से बाहर निकले।

संक्रमण को फैलने से रोके

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह संक्रमण किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है। इसलिए बहुत जरुरी काम होने पर ही घर से बाहर निकले। घर से निकलते वक्त अपने मास्क का इस्तेमाल अवश्य करें, जो अच्छे तरहसे आपके नांक और मुंह को ढके। समय–समय पर अपने हाथों को भी धोते रहें।

हवा और एक दूसरे के संपर्क में आने से इसके फैलने का खतरा अधिक होता है, अतः आप अच्छे मास्क का उपयोग करें। मास्क को बार–बार हाथ से न छुएं, इसे पहनने या उतारने के लिए इसके फीते या रबर का उपयोग करें।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सरल उपाय :-

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय की ओर से विभिन्न सुझाव दिए गए हैं जैसे –

- सुबह 10 ग्राम यानी एक चम्मच च्यवनप्राश का सेवन करना शामिल है। यदि आपको मधुमेह है तो शुगर फ्री च्यवनप्राश का सेवन कर सकते हैं।
- गोल्डेन मिल्क अर्थात हल्दी दूध का मिश्रण। 150 मिलीलीटर गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर मिलाकर दिन में एक या दो बार पीएं।
- तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च, सूखी अदरख और मुनक्का से बनी हर्बल चाय या काढ़ा दिन में एक या दो बार पीएं।
- विटामिन सी : विटामिन सी सबसे ज्यादा खट्टे फलों में मौजूद होता है जैसे संतरा, मौसमी, किन्नू, स्ट्रॉबेरी, जामुन, नींबू और आंवला। विटामिन सी शरीर में श्वेत रक्त कोशिका को बनाता है जो कि इंफेक्शन से लड़ने में शरीद की मदद करता है।

- अदरक, लहसून एवं पालक का सेवन : इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए इनका सेवन सब्जी, चाय, काढ़ा आदि के रूप में कर सकते हैं। इसमें कई तरह के एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली की संक्रमण से लड़ने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

योगासन एवं व्यायाम के द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास :- कमजोर इम्यूनिटी के लोग आसानी से कोरोना के संपर्क में आने पर उससे संक्रमित हो सकते हैं। ऐसे में व्यक्तिगत स्तर पर हमें अपनी इम्युनिटी को बढ़ाने का कार्य करना चाहिए। तनाव हमारी इम्युन यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर देता है। ऐसे में यह जरूरी है कि योग के आसन प्राणायम ध्यान विधि से हम तनाव को कंट्रोल में रखें और इम्युनिटी पॉवर को सशक्त बनाएं। साथ ही, योग के कई आसन ऐसे हैं जो हमारी इम्युन सिस्टम को कई तरीके से मजबूत करता है।

हमारे शरीर में इम्युनिटी के तीन मुख्य घटक हैं – थाइमस ग्लैंड, लिम्फ या लिम्फ नोड्स औ स्प्लीन। कुछ खास आसनों से हम इन तीन घटकों को ज्यादा सेहतमंद और एक्टिव रख अपनी इम्युनिटी को सुपर एनर्जी दे सकते हैं। आइये जानते हैं उसके बारे में –

थाइमस ग्लैंड -

थाइमस ग्लैंड गर्दन के नीचे और छाती से सबसे ऊपरी हिव्से के पास एक अंतरस्त्रावी ग्रंथि या ग्लैंड है। यह ग्लैंड खास हार्मोन पैदा करता है, जो इम्युन सिस्टम को मदद करता है। थाइमस के अंदर लिम्फोसाइड यानी टी–सेल पैदा होता है जो व्हाइट ब्लड सेल्स यानी डब्ल्यूसीबी का एक प्रकार है। टी सेल्स किसी भी तरह के वाइरस, बैक्टीरिया और फंगस को ठिकाने लगाने में माहिर होता है।

जब हम बैकबेंड आसन यानी पीछे झुकने वाले आसन जैसे सुप्त बद्ध कोणासन, धनुरासन, उष्ट्रासन करते हैं तो छाती ज्यादा स्ट्रैच होती है और थाइमस ग्लैंड ज्यादा एक्टिव व सेहतमंद रहता है और रोग से लड़ने की हमारी क्षमता बढ़ जाती है।

लिम्फ नोड्स -

शरीर का ये पहला रक्षा द्वारा जैसा है। शरीर में इसका एक रास्ता होता है, जिसके जरिए वो भ्रमण कर पाता है। हार्ट हमारे रक्त को शरीर केहर सेल्स तक पहुँचाता है, लेकिन लिम्फ के पास इस तरह की व्यवस्था नहीं है। हमज ब एक्टिव रहते हैं या स्ट्रैचिंग करते हैं तो लिम्फ ज्यादा एक्टिव हो अपना काम करती है। ये अपने तरल पदार्थ के साथ टी–सेल और बी–सेल को लेकर बाहरी वाइरस और दूसरे हानिकारक जर्म्स के खिलाफ अभियान छेड़ देती है। फिर नष्ट हुए विदेशी वायरस सेल्स को शरीर से बाहर करने का इंतजाम करती है।

स्प्लीन -

छाती की हड्डियों के अंदर ऊपरी हिस्से में स्प्लीन होता है। छोटा सा दिखने वाला ये अंग शरीर की रक्षा दीवार का बड़ा सेनापति जैसा है। स्प्लीन मुख्य रूप से इम्युन सिस्टम के लिए ये ब्लड की शुद्धता का ख्याल रखता है। पुराने रेड ब्लड सेल्फ सेल्स की जगह वो नए की व्यवस्था करता है। प्लेटलेट्स और नए व्हाइट ब्लड सेल्स की भरपूर आपूर्ति का भी इंतजात करती है। इस तरह ये इम्युन सिस्टम का आपूर्ति विभाग भी है। बैकबैंड के आसन से छाती स्ट्रैच होती है और इससे जरुरी अंग की कार्यक्षमता बढ़ती है।

इन तीनों घटकों को एक साथ मिलाकर आप मजबूती से कोरोना वाइरस के खिलाफ खुद का मोर्चो खोल सकते हैं। योगासन जो थाइमस ग्लैंड, लिम्फ नोड्स और स्प्लीन को एक्टिव कर इम्युनिटी को सुपर बूस्ट करेगा और तनाव से मुक्त कर हमें इम्युन कमजोर होने से बचाएगा।

<u>लॉकडाउन का दैनिक जीवन पर प्रभाव :</u>

1. **सामाजिक दूरी एवं इसका अनुपालन :** कोरोना के बढ़ते प्रभाव ने मानव के दैनिक जीवन को बदल कर रख दिया है। लोगों में इस महामारी के प्रति आतंक समा गया है। अत: वयक्ति एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर रखता है और सरकार ने सार्वजनिक स्थानों पर बिना मास्क के आवाजाही, खुले में खांसना, थूकना इत्यादि को दंडनीय अपराध करार कर दिया है।
2. **शादी एवं अन्य सामाजिक आयोजन :** जब कभी हम उन दिनों को याद करते हैं कि शादी या अन्य प्रकार के आयोजनपों में विभिन्न प्रकार के लज़ीज व्यंजनों का आनंद लेकर पूरे कार्यक्रम में नाचते झूमते एवं गाने की धुन पर थिरक थिरक एक दूसरे से गले लिपट कर कार्यक्रमों का आनंद उठाते थे परंतु अब यह एक नई दुनिया में आ गए हैं इस प्रकार के आयोजनों में लोग

वीडियो के द्वारा या वर्चुअल माध्यम से विभिन्न तकनीक द्वारा एक दूसरे को शुभकामना प्रेषित करते हैं।

3. **पर्यटन परिवह एवं अन्य संसाधन :** पर्यटन एवं होटल व्यवसाय तो जैसे जड़ से ही नष्ट हो गए हो। आज बाहर निकल पाना ही असंभव है।

4. **शिक्षा पर प्रभाव :** विद्यालयों में बच्चे अध्ययन के साथ साथ कैंपस में खेलते कूदते टिफिन का आनंद लेते थे। खेल का मैदान एवं कैंटीन भी खचाखच भरी रहती थी परंतु आज बच्चे ऑनलाइन क्लास के द्वारा घरों में ही कैद है। शिक्षा में पाठ्यक्रम खत्म करने के माध्यम के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा है। मस्ती की पाठशाला मानो अब एक सपना सा लग रही है और बच्चे, अभिभावक एवं अध्यापक सभी तनावग्रस्त रहते हैं।

5. **बेरोजगारी एवं व्यवसाय की स्थिति :** रोजमर्रा के कामकाज करने वालों का परिवार ही उजड़ गया है और रोजी–रोटी का जरिया ही खत्म हो गया है। साधन हीन समुदाय की स्थिति भूख से मरने जैसी है।

वर्तमान परिस्थितियों का ओएनजीसी पर प्रभाव : ओएनजीसी एक संगठन ही नहीं बल्कि एक परिवार है और सभी कार्मिक इस परिवार के सदस्य हैं। इसकी अपनी एक सतरंगी, एक हॅसती खेलती, एवं खिलखिलाती दुनिया है। इसके कार्मिक तपते रेगिस्तान, समंदर की तूफानी लहरों, बर्फीली हवाओं जैसे चुनौती पूर्ण वातावरण का सामना करते हुए अपने संगठन को उच्चस्थ बनाए रखने में समर्पित है। ओएनजीसी अपने आप में संपूर्ण विश्व की मानवता, संस्कृति एवं संबंधों को संजोए हुए, ऊर्जा की दिशा में राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में संलग्न है। इसके बढ़ते हुए कदमों की छाप विश्व पटल पर अंकित है। संपूर्ण विश्व में फैला हुआ ओएनजीसी के व्यवसाय पर राष्ट्र को गर्व है। कोविड–19 की काली नजर ने हमारे संगठन को भी डस लिया। विभिन्न क्षेत्रों में निपुण, समर्पित हमारे सहकर्मी गण भी कोविड – 19 के प्रभाव में आए और कुछ लोग इस संघर्ष में विजयी हो गए तथा कोरोना को मात देकर आज भी संगठन की सेवा में संलग्न है। परंतु कुछ साहसी योद्धा इस युद्ध में धाराशायी भी हो गए। वे आज हमारे बीच नहीं रहे। अपनों से असमय बिछुड़ने का गम ये वक्त कभी नहीं भर सकता है। हमने जिन परिवारों के साथ जगमगाती दिवाली, रंब बिरंगी होली, गीतों से सजी संवरी बैशाखी बनाई थी, इस कोविड–19 ने उनको हमारे से, हमारे संगठन से सदा के लिए दूर कर दिया। विभिन्न कार्य स्थलों पर अपनी छाप छोड़कर, ओएनजीसी को प्रगति की राह पर अग्रसर करते हुए स्वयं को संगठन के हवाले कर दिया। हमारे यह संगठन उनको नमन करता है।

कार्मिकों की सेवानिवृत्ति : सेवानिवृत्ति कार्यक्रमों का आयोजन और इसके दौरान सभी कार्मिक का इकट्ठा होना नितांत असंभव है। इन परिस्थितियों में एक लंबी सेवा के उपरांत संगठन से विदा ले रहे सहकर्मी गण को इकट्ठे होकर उन्हें विदाई देना असंभव है।

बैठकों, प्रशिक्षण एवं कार्यपद्धति में परिवर्तन का प्रभाव : ओएनजीसी की कार्यपद्धति बहु आयामी है। इन सेवाओं को सम्पन्न करने हेतु सघन बैठक एवं तकनीकी वार्तालाप की आवश्यकताओं से नाकारा नहीं जा सकता है।

अतः कोविड महामारी से अंततः एक अपूरणीय क्षति हुई हैं। हम सब मिलकर, तमाम सावधानी के द्वारा ही इसका सामना कर सकते हैं।

वक़्त हर ग़म, हर मंज़र को भुला देता है।
वक़्त के साथ यह सदमा भी गुजर जायेगा।।

बन्धन

डॉ. ज्योत्सना
पुत्री : श्री श्याम सुन्दर
उप–महाप्रबंधक (प्रोग्रामिंग)

इस संसार का संपूर्ण प्राणी जगत या यूं कहें कि इस ब्रह्मांड में विद्यमान अनेक पिंड, ग्रह, तारे एवं नक्षत्र सभी अपनी – अपनी कक्षाओं में चलायमान रहते हैं परन्तु वे सभी एक–दूसरे से एक अदृश्य बल के द्वारा अटूट बंधन से जुड़े रहते हैं, बंधे रहते हैं। यहॉ तक कि कल–कल, छल–छल करती स्वच्छंद सरिता के नैसर्गिक प्रवाह को भी उसके दोनों कूलों के बीच के बंधन का प्रतिपालन करना पड़ता है। ताकि उनके प्रवाह का समन्दर से मिलन हो सके और वह पूर्णता को प्राप्त हो सके। तो इस सृष्टि के निर्माता, जगत शास्ता की सर्वोत्तम कृति "एक नारी" भला इन बंधनों से कैसे मुक्त रह सकती है। अतः हम देखते हैं कि "एक नारी" किस प्रकार से अपने आपक को मर्यादाओं में, सीमाओं में, तमाम बंधनों से जकड़ कर रखते हुए मानवता के लिए, इस सृष्टि के संचार के लिए समर्पित है।

बचपन के क्षण

इस जगत में इसका पदार्पण एक नन्हीं सी गुड़िया के रूप में हो जाता है और पालने में ज बवह कदम रखती है तो उसकी एक नन्हीं सी चपन मुस्कार, ठुमक – ठुमक कर नूपुर की आवाज, तोतलाती बोली और भावनाओं को भोलापन। समस्त सांसारिक बंधनों से बेखबर उनकी प्रत्येक कला उनके माता–पिता के मन को मोह लेती है और उनका यह मन अनायास ही बोल उठता है :–

तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी जान देगी जान
धूल धूसर तुम्हारे यह गात
छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में
खिल रहे जल जात
परस पाकर तुम्हारी ही प्राण
पिघल कर जल बन गया होगा
कठिन पाषाण ....।।

बचपन का भोलापन, मन की चंचलता आंगन की खुशहाली और माता–पिता के गोद की शोभा, प्रकृति की एक अद्भूत देन। परंतु वह यहां पर भी बंधन में है, सीमाओं में है। माता–पिता के प्यार का अनोखा बंधन। उकने गोदकी सीमा, उनके संरक्षण की सीमा।

पाठशाला के पल

कदम अब धीरे–धीरे मजबूत होने लगे पांव पालने से बाहर निकालने को आतुर हो गए। ज्यों–ज्यों कंधे मजबूत होने लगे उनके ऊपर पड़ने वाला बोझ भी बढ़ने लगा। नजरें दूर तक देखने लगीं और माता–पिता ने भी नये – नये सपने संजोना शुरू कर दिया कि बेटी के लिए अच्छी शिक्षा हो, भविष्य की सुंदरता हो, उसमें अपने कदम पर खड़े रहने की उत्कृष्ट क्षमता हो। अब वह माता–पिता के कोमल गोद के बंधन से मुक्त होकर उसे पुनः गुरुजनों एवं पाठशाला की सीमाओं से जुड़ना पड़ा, बंधना पड़ा ....।

डॉक्टर बनूँ या इंजीनियर बनूँ ....।
सुंदर भविष्य का यही सपना ....।।

अपने पलकों में सपने सँजोती हुई। खुदको सपनों के बंधन से बांधकर संपूर्ण जगत को बंधनों से मुक्त करने का अदम्य साहस, कदम – कदम पर चुनौती, हिम्मत एवं हौसला बढ़ाती है। आज वह गुड़िया हर हिलोर के साथ अंबर छूने का जज्बा लिए, अपने सारे बंधनों से बेखबर बस हँसती जाती है, खिलखिलाती जाती है। सुन्दर भविष्य के पींग के हर हिलोरे के साथ एक पग आगे बढ़ जाती है और ऊँची उठती जाती है।

पारिवारिक बंधन

संस्कृति और सभ्यता हमारी धरोहर है। उसका सूत्रधार भी ''नारी'' ही है। तीज–त्यौहार मनाए जाते हैं, मेले आते हैं। मन और भावनाओं से बंधे रहने का बंधन, ''रक्षा का बंधन – रक्षाबन्धन'' एक भाई का अपनी बहन के प्रति ''रक्षा'' के प्रण का बंधन, बस इसी बंधन से जुड़कर अपने अस्तित्व को संजोए रखने वाले सपनों का उद्गार, उसकी अभिव्यक्ति व्रत या उपवास रखकर भाई–दूज के दिन भाई को तिलक लगाती है तथा उसके लंबी उम्र की कामना करते – करते नहीं थकती है और उसका मन बस यही गुनगुनाता रहता है

राखी के दिन मैं फूली नहीं समाती
भईया की आरती उतारती
निकलती मेरे दिल से लाखों दुआएं
आप पर कभी भी कोई आंच ना आए
और मन में बस यह कहती है
यह बंधन नहीं है कोई

हम पूरक हैं एक दूजे के
कोई हाशिया नहीं.......

कभी भाई के प्यार में भावुकता के आवेश में आंखों से अश्रु की धारा निकल पड़ती है और वह इस बंधन में आनंद महसूस करती है। पति के लिए करवा–चौथ का निराजली व्रत और फिर चन्द्र दर्शन के बाद लम्बी आयु की कामना ....। न जानें कितनी औपचारिकताओं के बन्धन को सहर्ष स्वीकार करने की आतुरता और उनका निर्वहन करने की क्षमता से भरपूर ...।

तरुणाई

समय के साथ–साथ परिवर्तन के क्षण, मन का परिवर्तन, भाव का परिवर्तन, जीवन के सफर में एक नया मोड़, तरुणाई की नई दस्तक। भंवरों के गुनगुनाहट में एक संगीत का आभास होने लगा, पुष्पों के मधुर सुगंध में मोहकता नजर आने लगी। हवा के हर झोंके के सिहरन लगने लगी। बसन्ती मौसम की मादकता के साथ तरुणाई की सीढ़ी चढ़ने लगी। नई उमंग, नई तरंग, कुछ नई–नई हिलोरे ..... बस मासूम मन पुनः एक नए बंधन में बंध गया, अपने प्रियतम के प्रेम डोर से लिपट गया और कहने लगा कि :

एक नजर देख लो मुझको तो बिना सांसों की जी सकती हूँ
तुमसे इतना प्यार करती हूँ
यह अलग बात है कि कुछ कह नहीं पाती हूँ.....।

और उसके प्रियतम का यही प्यार उन्हें ''एक अटूट बंधन'' में बांध देता है। एक साथ जीने का बंधन और इन्हीं बंधन के साथ जीवन का सफर एक नए आयाम के साथ, एक नए पहलू को छूता हुआ आगे बढ़ चलता है और बस प्रेम पाश में बंध कर वक्त के साथ हिलोरें लेती हुई वह अपने नारीत्व की पूर्णता को प्राप्त कर लेती है।

मातृत्व बंधन

एक स्वर्गिक सुख, मातृत्व का सुख। उसको जीवन के सफर में एक नए मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है। इतिहास अपने आपको पुनः दोहराता है। कल तक मुक्त गगन में पंख पसार कर उड़ने को आतुर मन, मातृत्व के प्यार के बंधन से बंध जाता है और वह कह उठती है।

हां, मैं मां हूं अपने लाडलों की
अपने को धूप में रखकर
उनको रखती छांव में आंचल की
खुद कम खा कर उनको खिलाती

माथे पर कोई शिकन नहीं आती
मैं मां हूं अपने लाडलों की
हां....मैं.....मां....हूं.....मां.....हूं

बच्चों के प्रति

समय का रुख बदलता है बंधन का एक नया स्वरूप सामने आता है। कल तक जो खुद के भविष्य की को संवारने, संजोन एवं सहेजने वाली उन आंखों में अब अपने बच्चों के भविष्य को संवारने के सपने सजने लगते हैं। एक मां का कोमल हृदय, अपने बच्चों की भविष्य की सुरक्षा के लक्ष्य के बंधन में बंध कर रह जाता है। इसी बंधन के सहारे वह आगे का सफर तय करती रहती है।

आश्रय

जीवन के इसी सफर का एक पड़ाव जब बच्चे विकसित हो गए और अपने पैरों पर खड़े हो गए। उन्होंने अपनी एक दुनिया बसाई और उनकी उस दुनिया में अपने को एक नन्हीं सी जगह मिली जहां मुक्त हवा की थोड़ी सी कशमशाहट नजर आने लगी हर एक क्षण, हर एक पल धीरे – धीरे भारी लगने लगा। अपनी दुनिया सिमटने लगी। विस्तार ने बिन्दु का रूप लेना शुरू कर दिया। पुनः अपने जीवन के नए बंधन का आभास हुआ आश्रित रहने का असहाय रहने का।

आखिरी पल

समय का चक्र चलता रहा। वक्त मुट्ठी के रेत की तरह पर फिसलता रहा। बचपन के सब सपने धीरे–धीरे धूमिल होने लगे। यादों के हर पल पर नई रेखाएं खिंचने लगी। वह क्षण वह पल जो कभी आनंद देते रहते थे उनकी परिभाषाएं बदलने लगीं। भाई के लिए भाई–दूज या रक्षाबंधन, पति के लिए करवा–चौथ, बच्चों के लिए गणगौर की पूजा न जाने कितने उपवास न जाने कितने एकादशी के व्रत, आजीवन दूसरों के लिए अपने को बंधन में जकड़कर चलने वाली ''नारी'' के जीवन का सफर अपनी पूर्णता की ओर अग्रसर हो चला।

अंतरतम से एक आवाज आने लगी जैसे कोई पुकार–पुकार कर कह रहा हो कि अब यह बंधन शायद सदा–सदा के लिए खत्म हो रहा है और मुक्त होने की घड़ी आ गई है। बस यूं कहें कि जैसे बंधन ही नारी का अस्तित्व रहा है, उसका जीवन रहा है, और बंधन से मुक्त रहना उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह रहा है और बस......

वो औरत है जो रत रहती है औरों में,
त्याग, पवित्रता, संयम कि वह मूरत है,
सहिष्णुता, बलिदान, तपस्या, सब गुणों से वह पूरन है,
न्वजीवन निर्माण हे, अर्पित अपने को कर देती है,

वो औरत है जो औरत रहती है औरों में........।
इस पुरुष प्रधान समाज में जीवन उसका अनुबंधित है,
यद्यपि जीवन सबा, उस पर ही और अवलंबित है,
वो औरत है जो रत रहती है औरों में.....
वो मूल है जीवन का, पर उपकार ना कोई मानता है
इस दम्भ भरे समाज में उसका शोषण होता है
तन से, मन से, हृदय से, जीवन क्रम से, समर्पित है
हाय! विडंबना जीवन उनका अनुबंधित है
वो औरत है जो रत रहती है औरों में.......

यात्रा संस्मरण – मुक्तेश्वर:

खूबसूरत ट्रैवल डेस्टिनेशन की हमारे भारत में कोई कमी नहीं हैं। अगस्त में अहमदाबाद से ओवीएल दिल्ली ट्रांसफर होने से हम उत्तर भारत टूरिस्ट प्लेसेस के नजदीक भी आ गए थे। लेकिन कोविड पेंडेमीक लोकडाउन और पर्सनल सेफ्टी रिजन से घूमने का कोई प्लान बन नहीं रहा था। दस महीनों के बाद आखिर दिसंबर में छुट्टी मिली और दिल्ली से उत्तराखंड का एक हफ्ते का सेल्फ ड्राइव फॅमिली ट्रिप का प्लान बना लिया... 2 दिन मुक्तेश्वर, 2 दिन सातताल में बर्डीन्ग और तीन दिन जिम कॉर्बेट में जंगल सफारी.. पूरा नेचर ओरिएन्टेड ।

मुक्तेश्वर और सातताल नॉर्मली किसी फेमस् टूर ऑपरेटर की आयटनरि में नहीं आते। यूट्यूब के एक वीडियो में कुमाऊँ मण्डल विकास निगम याने केएमव्हीअेन् के मुक्तेश्वर गेस्ट हाउस से हिमालायन रेंज का मॅग्निफिसन्ट व्यू देखा था। कोविड के चलते उनकी वेबसाइट डाउन थी तो उनके दिल्ली ऑफिस से कॉन्टॅक्ट किया। ऑनलाइन पेमेंट के बाद तुरंत कंफर्मेशन व्हॉट्सप्प पे आ गया। रिस्पॉन्स बोहोत फास्ट, ॲटीट्यूड फ्रेण्डली और वेलकमिंग था।

मुक्तेश्वर दिल्ली से सबसे दूर... करीब 350 किलोमीटर ... आठ घंटे की कार जर्नी.. ।तो सबसे पहले वही डेस्टिनेशन फायनल किया। सुबह साढ़े पांच बजे दिल्ली से निकले तो साढ़े नौ बजे तक कोहरे के कारण स्पिडोमिटर का कांटा साठ सत्तर किमी से आगे बढ़ ही नहीं पा रहा था। गूगल मॅप के अनुसार मुक्तेश्वर के लिए गाजियाबाद हल्द्वानी भीमताल से होते जाना था। हलद्वानी के बाद अबतक का प्लेन

लॅंडस्केप खुबसूरत हिली टरेन में बदल गया। ज्यादा तर रोड वाइड और काफी अच्छा था। जंगल में एक सेफ जगह देख कर गाड़ी साइड कर के घर से लिया हुआ ब्रेकफास्ट इन्जॉय लिया।

उस दिन बारिश और कोहरे का माहोल मुक्तेश्वर तक बरकरार था। क्लायमेट सुपर चिल्ड़ हो गया था। ऑन द वे, निर्वाणा ऑर्गेनिक किचन में लंच के लिए रुक गए। जबरदस्त ठंड थी और पहाड़ी थाली में दाल का गरमागरम सूप और ट्रॅडीशनल खाना सुकून भरा लगा रहा था। लंच करने के बाद करिबन डेढ़ बजे हम मुक्तेश्वर के गेस्ट हाउस पहुंच गए।

केएमव्हीएन का गेस्ट हाउस माउंटन टॉप पर बसा हुआ है और रोड यही पर खत्म हो जाता है। गाड़ी पार्क करके एक्सीक्यूटीव्ह रूम्स की तरफ निकले ही थे तो देखा सामने से मॅजेस्टिक हिमालयन पिक्स की रेंज, कुमाऊँ हिल्स के साथ हमारा स्वागत कर रही थी। उस दिन कोहरे के कारण हिमालय रेंज थोड़ी धुंधली दिख रही थी बट व्हीऊ वॉज जस्ट नेक्स्ट लेव्हल। सुपर चिल्लड़ हवा चल रही थी इसलिए दुसरे दिन क्लियर स्काय का प्रेडिक्शन था। अगर हवा रुक जाती तो स्नो फॉल हो सकता था।

सुबह सनराइज के साथ हिमालाय के अलग अलग पीक्स एक के बाद एक ग्लिटर करते हुए देखना एक माइंड ब्लोइन्ग एक्सपीरियन्स था। नंदा खाट, हाथी पर्वत, त्रीशुल 22360 फीट, राजरंभा और पंचचौली पर्वत शिखर का क्लियर व्यू वॉज जस्ट मेस्मराइजिंग और सबसे खास था भारत का सेकंड हायेस्ट पीक ... नंदादेवी 25645 फीट। सुबह सुबह की ठंड में, नीचे वादियों में और विलेजेस के ऊपर नेचर ने कोहरे की चादर ओढ़ी हुई थी तो हिल्स के बीच में नदी होने का इलुजन हो रहा था। यही व्यू सनसेट पे खूबसूरती के कुछ अलग ही डायमेंटशन डिफाईन करता गया। इस व्यू को स्पेशल बना रहा था हिमालयन बर्डस का मेलोडियस बैकग्राउंड म्युझिक। ये रिजन बर्डवॉचर्स के लिए पैरेडाइज हैं। पता चला कि फेमस् शिकारी जिम कॉर्बेट मुक्तेश्वर के मॅनइटर टायगर को मारने के लिए यही पे रुके थे।

हिमालय के बॅकड्रॉप में गार्डन में स्नॅक्स या ब्रेकफास्ट और गरमा गरम कॉफी वॉज जस्ट अनफरगेटेबल। हमारा रूम काफी बड़ा था विथ टीवी और केबल चॅनेल्स, एक चेंजिंग रूम विथ ड्रेसिंग टेबल और एक बड़ा सा वॉशरूम। फायर प्लेस फंक्शनल नहीं था। कोविड के चलते हम अपना मेट्रेस और पिलो कवर्स, ब्लॅंकेट्स और टोवेल्स घर से लेके चले थे तो वोही यूज किए।

नैनीताल से 70 किलोमीटर दूर कुमाऊँ हिल्स पर 7500 फिट हाइट पे बसा डेन्स फॉरेस्ट से कव्हर्ड मुक्तेश्वर, साढ़े पाँच हजार साल से मुक्तेश्वर महादेव मंदिर जाना जाता है । 1885 में स्थापित कैटल्स और एनिमल्स के वैक्सिनेशन रिसर्च के लिए फेमस् इंडियन वेटरर्नरी रिसर्च इंस्टीट्यूट भी यही पे बसा हुआ हैं। पहाड़ की सीधी चट्टान याने चौली की जाली व्यू पॉइंट सनसेट व्यू के लिए फेमस् हैं और 20 किलोमीटर ड्राइव के बाद थोडा ट्रेकिंग करके आप भालुगड़ वॉटरफॉल तक पहुंच सकते हैं। बस इतने ही पॉइंट्स ऑफ इंटेरेस्ट।

ब्रेकफास्ट के बाद गेस्ट हाउस से हम चल पड़े जंगल के रास्ते चौली की जाली की ओर। घने जंगल से पाँच दस मिनट का कच्चा रास्ता हमे वहाँ ले गया। इस जगह से गेस्ट हाउस से न दिखने वाला दूसरी ओर का पूरा 180 डिग्री व्यू मिलता हैं। काफी सारे लोग अडवेंचरस सेल्फी खिचने की रेस में थे। कुछ स्टॉल्स गरमागरम पकोड़े, मॅगी और नाश्ता पानी के साथ तैयार थे। काफी सारे कलाकारों ने उस चट्टान के पत्थरों पर अपने नाम की करव्हिंग करके पर्मानेंट छाप छोड़ी हई थी। रस्सी से बनाई हुई मॅन्युअली कंण्ट्रोल्ड छोटे डिस्टन्स की झिप लाइन बोहोत खतरनाक लग रही थी। पर यहाँ भी काफी लोग एडवेंचर का मजा ले रहे थे। वहाँ से थोड़ी दूर चलने से हम पहुंचते हैं यहाँ के 5350 साल पुराने महादेव मंदिर में। भोलेनाथ के दर्शन करके आजू बाजू थोड़ी देर टहलते हुए हम फिर से पहुंच गए हमारे गेस्ट हाउस में। खाने का ऑर्डर पहले ले कर डाइनिंग हॉल मे लंच या डिनर का प्रबंध होता हैं। खाना सिम्पल गरमा गरम और टेस्टी था। उस रात जेमिनिड मेटीओर शॉवर देखने मौका था और शूटिंग स्टार्स देखने का सुनहरा मौका मिला। लेकिन रात बारह साढे बारह बजे के बाद मरक्यूरी लेवल एक डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर गया और फिर हम भागे हमारे रूम में।

भालुगड़ वॉटरफॉल करीबन बीस किलोमीटर की दूरी पर हैं। पहले दिन बरसात हुयी थी और आकॉर्डिंगली ॲप्रोप्रीएट अक्सेसरिज नहीं होने से वॉटरफॉल में भीगना हमने अगले ट्रिप के लिए छोड़ दिया।

अभी वक्त हैं मेरे ऑबजर्वेशन्स का :

डेस्टिनेशनः अगर आप नेचर लवर हैं तो दो दिन नेचर के बहुत नजदीक रिज्युवीनेट होने के लिए ये जगह सही में पॅराडाइज हैं। आसमान साफ होने से हिमालयन रेंज देखते हुए कॉटेज के सामने से हटने का मन ही नहीं करता। महादेव मदिर, चौली की जाली और करीबन 20 किलोमीटर दूरी पर भालुगड़ वॉटर फॉल इनके अलावा और कोई टूरिस्ट स्पॉटस नहीं हैं। यहा बर्ड वॉचीन्ग भी बेहतरीन् होती हैं।

ॲकोमॉडेशन : के एम व्ही अेन् के गेस्ट हाउस बहुत स्ट्रॅटेजिक लोकेशन पे बसा हुआ हैं। बुकिंग के लिए एक्सीक्यूटिव्ह रूम्स प्रिफर करें ... रूम्स विथ हिमालय व्ह्यू, काफी स्पेशियस... रिझानेबाली क्लीन, खाना टेस्टी और सर्विस अच्छी थी। एक्सएक्यूटिव रुम्स के सामने बेंच पर ठंडे क्लायायमेट में गरमागरम ब्रेकफास्ट, स्नॅक्स, मॅगी ... मजा या जाएगा। सुपर लक्जरी स्टे की एक्सपेक्टेशन्स ना हो। एक्सीक्यूटिव्ह रूम्स के अलावा एक और हायर कॅटेगरी रूम विथ सोफा भी मिल सकता हैं। इन रूम का नॉर्मली रेंट रुपये 2600/– और 3200/– प्रति दिन होता है जो पीक सीजन में दुगना हो जाता हैं। थोड़ी ढलान पे उनके और कॅटॅगरी के रूम्स भी ॲव्हेलेबल हैं।

यहा हाय एंड रिसॉर्ट नहीं दिखे लेकिन बहुत सारे होम स्टे और छोटे रेसॉर्टस हैं। विंटर में आना हैं तो फूल विंटर गियर के साथ आना ... मिनिमम टेम्परेचर मायनस में जा सकता हैं । दिसम्बर एंड से मार्च

तक स्नो फॉल का आनंद लिया जा सकता है लेकिन याद रहे ... ये ड्राइव्हींग हॅसल्स क्रीएट कर सकता हैं। गेस्ट हाउस में रूम हीटर रेंट पे मिल जाता हैं लेकिन काफी बड़ा रूम होने से उसका एफेक्ट सीमित एरिया तक ही होता है। बायनोक्यूलर्स और कैमेरा लाना ना भूलें। यहाँ आते व्यक्त भीमताल के बाद मुक्तेश्वर के रास्ते पर बहुत जगह हिमालयन रेंज के व्यू के साथ काफी सारे अच्छे होटेल्स भी दिख रहे थे।

रास्ता : हमारे रूट की रोड कंडीशन काफी अच्छी थी... घाट रिजन्स के ड्राइव्हिंग से वाकीफ होना अच्छा होगा। मुक्तेश्वर जाते वक्त हरे भरे हिली एरिया में जंगल्स और हिमालयन् रेंज के नजारे देखते हुए आने मे जर्नी की थकान महसूस ही नहीं होती। एक बात ध्यान रहे ... जिनको मोशन सिकनेस की प्रॉब्लेम हैं वो प्रॉपर टॅबलेट्स लेके आएं। मुक्तेश्वर से करीबन 45 मिनिट्स पहले हमारा गूगल मॅप उलटी पुलटी डिरेक्शनस दिखाने लगा तो पता चला एक मोड पर हमने गलत रास्ता पकड़ लिया था.. तो साइन बोर्डस की तरफ ध्यान दें और सबसे इम्पॉर्टन्ट .. दिल्ली से जा रहे हो तो जितनी जल्दी निकाल पड़ो उतना बेहतर ..

स्पेशलिटी : नेचर नेचर और सिर्फ नेचर, ग्रॅन्ड हिमालाया रेंज व्यू.. , काफी सारे बर्डस, पुराना महादेव मंदिर, फ्रेश एयर और रेफ्रेशिंग क्लायमेट.

तो इंतजार किस बात का .. चलो ... चले मुक्तेश्वर....

....अजय प्रमोद साने
महाप्रबंधक– उत्पादन

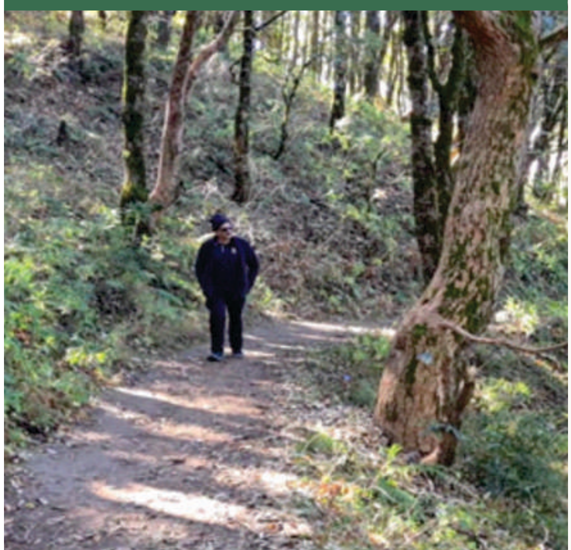

"स्वतंत्रता की कीमत शाश्वत सतर्कता है"

श्रीमती आशु शर्मा
पत्नी, श्री मनीष शर्मा

15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंता मिली। स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत में शासन करने लिए संविधान बनाया गया। भारतीय संसद में संविधान पारित होने के बाद भारत सरकार ने 26 जनवरी 1950 को अपनाए गए संविधान की घोषणा की। इस दिन को गणतन्त्र दिवस कहा जाता है। गणतन्त्र दिवस हमें याद दिलाता है कि हमेशा संविधान की रक्षा करनी चाहिए। शाश्वत सतर्कता स्वतन्त्रता का मूल्य है जब तक हम उस कीमत का भुगतान नहीं करते, हम अपनी स्वतन्त्रता का बचाव नहीं कर सकते। इसलिए जागरूक रह कर हम सबको संविधान की रक्षा करनी चाहिए। अन्यथा, देश लोकतन्त्र खो देगा और तानाशाह की ओर भागेगा; क्योंकि लालची लोग तानाशाही करना चाहते हैं। इसलिए ये और भी जरूरी हो जाता है कि हम सभी सतर्क और जागरूक रहे। जो समाज या राष्ट्र जागरूक नहीं होता उसे बहुत तकलीफें उठानी पड़ सकती है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के द्वारा हर वर्ष अक्तूबर के अंतिम सप्ताह को **सरदार वल्लभ भाई पटेल** के जन्मदिन को ध्यान में रख कर **''सतर्कता जागरूकता सप्ताह''** के रूप में मनाया जाता है।

सरकार द्वारा रेडियो और टेलिविजन के माध्यम से समय–समय पर लोगों को जागरूक करने के प्रयास किए जाते हैं। जिससे निरक्षर लोगों को भी समझने में आसानी रहती है। पैम्पलेट्स तथा बैनर के माध्यम से शिक्षित लोगों तक जानकारी पहुँचाई जा सकती है। अशिक्षा इस क्षेत्र में सबसे बड़ी रुकावट मानी जा रही है। अशिक्षा के कारण ही लोग अपने अधिकारों को पूरी तरह समझ नहीं पाते, और दूसरों के झाँसे में आ सकते हैं।

सतर्कता जागरूकता की जानकारी होने से समाज के सभी वर्गों खासकर युवाओं का ध्यान एक ईमानदार, गैर भेदभावपूर्ण और भ्रष्टाचार युक्त समाज के निर्माण करने की तरफ आकर्षित होगा। इसके लिए समय–समय पर सभी केन्द्र सकार के संगठनों को जागरूकता अभियान की सभाएं की जानी चाहिए। ऐसी कुछ सभाएँ पिछले कुछ सालों में की भी गई हैं। जिनसे अशिक्षा, अस्वास्थ्य, भ्रष्टाचार इत्यादि जैसे विषयों से मुक्त होने के उपाय सुझाए गए। मौजूदा सरकार ने जागरूकता फैलाने में अपनी पूरी ताकत लगा दी है। शौचालय के प्रयोग की जागरूकता इसका प्रमाण है। कोरोना वायरस से लड़ने में भी सरकार द्वारा पूरा प्रचार प्रसार किया गया। इसी वजह से हर वर्ग का नागरिक आज कोरोना वायरस से बचाव के सभी उपाय जानता है।

सतर्कता जागरूकता द्वारा भ्रष्टाचार मिटाने में भी साधारण नागरिकों की मदद की जा रही है। बैंक संबंधी नियमों की जानकारी, उनके बदलाव व ठगी से बचने सम्बन्धी सुझाव, रेलवे संबंधी जानकारी, किसानों की हित की जानकारी इत्यादि रेडियो, टेलिविजन द्वारा निरक्षरों तक पहुॅंचाई जा रही है।

हमें भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिए कुछ उपायों को अपने जीवन में उतारना बहुत जरूरी है। अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी बरतने तथा विधि द्वारा स्थापित कानून के नियमों का पालन करने, रिश्वत नहीं लेने और न ही रिश्वत देने, अपने सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी तरीके से करने, जनहित के लिए भ्रष्टाचारियों का सामाजिक बहिष्कार करने, स्वयं के निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करने तथा भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित अधिकारी से करने का वचन लेना चाहिए।

सतर्कता और जागरूकता फैलाने में नारों का अपना अलग ही महत्व है। नारा, किसी भी पढ़ने वाले के दिमाग पर गहरी छाप छोड़ता है। जैसे :

''हमारा अब से एक ही नारा

सतर्क और जागरूक रहना

अब से काम है हमारा''

****

आलेख

श्री सत्यजीत राउत
भूविज्ञानी

ईश्वर या प्रकृति ने प्रत्येक जीवधारी को सुरक्षित रखने या रहने के लिए प्राकृतिक रूप से संपन्न कर रखा है और वरदान दे रखा है। पेड़–पौधों को सुरक्षा के लिए धरती ने जकड़ कर रखा है ताकि वह खड़े रह सकें तनों को, फूलों पत्तियों को, काटने पर पुनः उत्पन्न होने की क्षमता प्रदान कर रखी है। पक्षियों को सुरक्षित रखने के लिए उनके पंख, चोंच, पैरों की बनावट उनके जीवन संघर्ष में सहायक बनाती है। पशुओं को बल व गति प्रदान कर रखी है, जिससे वह अपने आप को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं। असमर्थ होने पर अपने प्राणों को संकट में डालते हैं। मानव जाति को प्रकृति ने जो अमूल्य निधि दी है वह है बल व बुद्धि दोनों, जिस आधार पर वह स्वयं व समाज और प्रकृति की सुरक्षा कर सकता है। जीवन और सुरक्षा यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं हम अपने जीवन को सुचारु और व्यवस्थित तरीके से सक्रिय रखने के लिए पहले जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करना अति–आवश्यक है जब तक सुरक्षा सुनिश्चित नहीं होगी हम भयग्रस्त रहेंगे। हम भयक्रांत होकर किसी भी प्रकार का कार्य सकुशल नहीं कर सकते। भयभीत वातावरण में हमारी क्षमता, कार्यशक्ति, बौद्धिक स्तर, नैतिक मूल्यों आदि सभी का पतन होता है जिस कारण हम विवेकहीन विकासहीन हो जाते हैं तथा पतन की ओर उन्मुख हो जाते हैं व अंत में विनाश इस प्रकार का वातावरण स्वयं से प्रारम्भ होकर समाज में फैलता है और देश व दुनिया में असुरक्षित रखकर कोई भी व्यक्ति न अपना भला कर सकता है न समाज का, न देश का, न दुनिया का। सुरक्षा व सुरक्षित वातावरण हमारे अंदर दोगुनी शक्ति का संचार कर देता है जिससे हमारी कार्यक्षमता में बढोत्तरी होती है। हम कोई भी कार्य करने से पहले उसके सुरक्षा मानकों का आकलन करते हैं और अवश्य करना चाहिए। सुरक्षित रहेंगे तभी जीवित रहेंगे। खाने – पीने से लेकर अपने आस–पास की हर चीज में हम अब सुरक्षा के मानकों को सर्वोपरि रखते हैं। हम स्वयं जब सुरक्षित रहेंगे तब दूसरों को समाज को देश को सुरक्षित रख सकते हैं। आजकल कोरोना में तो व्यावहारिक रूप से प्रमाणित हो गया है कि पहले स्वयं की सुरक्षा आवश्यक है – जब हम सुरक्षित रहेंगे तभी कुछ कर सकेंगे।

श्रीमती कोमल चौहान
(पत्नी – श्री हितेन्द्र सिंह परिहार)

एक लड़की

मैं एक छोटे से गांव में पली बढ़ी।
लेकिन सपने हमेशा बड़े देखें।।
मैं दुनिया देखना चाहती हूँ।
लेकिन अपने गांव को भी नहीं छोड़ना चाहती।।
मैं आसमान की ऊंचाइयों को छूना चाहती हूँ।
लेकिन अपने पैर जमीन से भी जुड़े हुए रखना चाहती हूँ।।
मैं अपने परिवार का सहारा बनना चाहती हूँ।
लेकिन परिवार के रुढ़िवादी विचारों में बंधना नहीं चाहती।।
मैं लाखों लड़कियों को रास्ता दिखाना चाहती हूँ।
लेकिन खुद किसी रास्ते में खोना नहीं चाहती।।
मुझे मंजिल का पता नहीं है।
लेकिन रास्ते खोजना बंद नहीं करना चाहती।।
एक लड़की जो प्यार करना चाहती है।
लेकिन प्यार की शर्तों में बंधना नहीं चाहती।।
एक लड़की जो सब कुछ करना चाहती है।
बस रुकना नहीं चाहती है।।

अखिलेश रक्षित
सुपुत्र : श्री श्याम सुन्दर
उप–महाप्रबंधक (प्रोग्रामिंग)

लॉकडाउन : एक मंज़र

सूनसान सड़कें, खाली दुकानें
लोग घर बैठे, अपना भाग निभाने
कैया ये मंजर, अटपटा लगता है
सब कुछ क्यों थमा–सा लगता हे
फिर क्यों मन इतना भागता है
कलम उठाए देर जागता है
शायद यह उसकी गलती हो

लोग कहते हैं ''यह उसका फर्ज है''
कैसे लॉटाऊँ मुझ पर उसका कर्ज है
क्या कभी मैं ऐसा बन पाऊँगा
या समाज की गन्दगी में सन जाऊँगा
न ज़रा सा आराम
न ढंग का इंतजाम
क्या ये सब सह पाऊँगा
या बस यूँ ही रह जाऊँगा
अभी भी लड़ रहा वो समाज के लिए
हमारे अच्छे कल और आज के लिए
वो अभी जाग रहा
हमारे लिए भाग रहा

अपनी सारी सीमा को तोड़ दिया
हमारे लिए घर छोड़ दिया
बैठने के लिए वक्त नहीं
शरीर में जुनून है रक्त नहीं
कल क्या होगा उसने सोचा ही नहीं
''कब आओगे'' घरवालों ने पूछा ही नहीं
हजारों का बोझ उसके सर पर है
हम थक गये, हम तो घर पर हैं।

एहसान है उनका
जिसने जीवन आसान किया है
हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई
सबको एक सा मान दिया है।
डाक्टर, नर्स, सफाईकर्मी
या हो सैनिक वर्दीवाला
दूध, सब्जी, बिजली, पानी

या हो टीवी, रेडियो, पेपरवाला
डाल के खुद को खतरे में
जग का सम्मान किया है
धन्य किया है हम सब को
और जीवन आसान किया है।

आओ मिलकर तोड़ें चेन
कोरोना वायरस दूर भगाएं
रहें घरों में अपने हम
सबको स्वस्थ बनाएं
देश सेवा की खातिर हम सबने
यह दृढ संकल्प किया है
धन्यवाद है उन सबका
जिसने जीवन आसान किया है।।

****

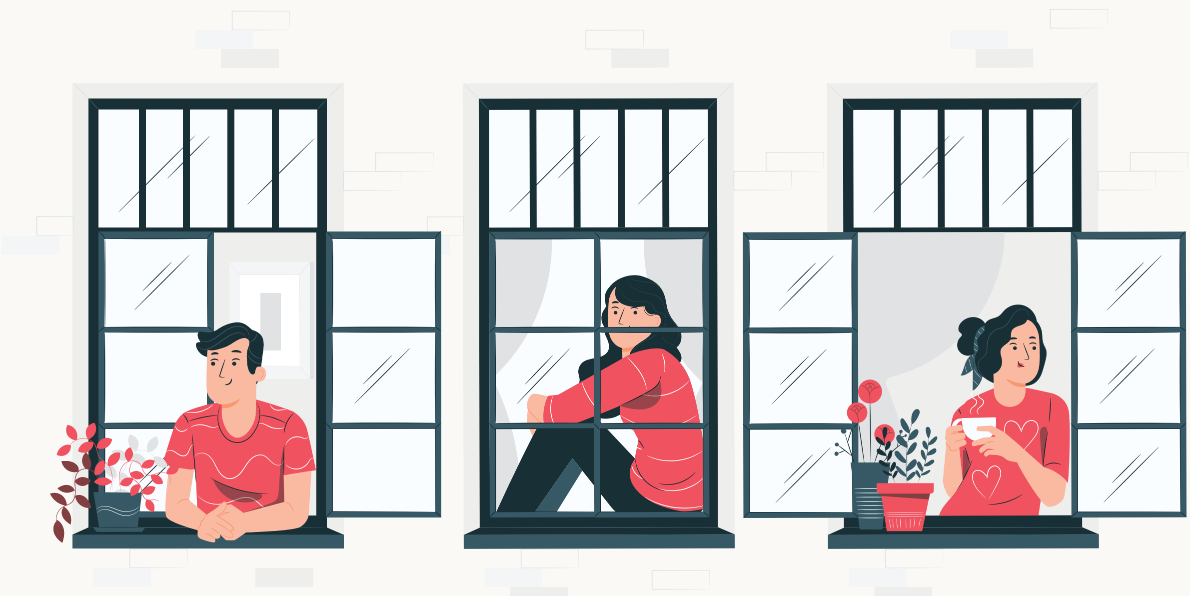

महादेव तांडव

विनोद कुमार
मुख्य अभियंता (उत्पादन)

त्रिनेत्र खुलें , विशाल हैं
गले में मुंड माल हैं।
डमग डमग सी चाल है
मचा रहीं भूचाल है।
जटे खुलीं विकराल हैं
बदन पे सिंघ छाल है।
भस्म से नहा के, महादेव बने काल हैं।
|| 1 ||

त्रिशूल तान के खड़े
भुजंग शान से खड़े।
जो देखता वही ड़रे
फिर कौन सामने पड़े।
डमरू से तान हैं भरें
और मौत का तांडव करें।
भूखंड खंड करने को, महादेव आज हैं अड़े।
|| 2 ||

काली भवानी डर रहीं
जय जय प्रभु की कर रहीं।
सारी दिशायें मर रहीं
सब त्राहिमाम कर रहीं ।
सर , मौत सब कतर रही
कमंडल लहू से भर रही ।
ब्रह्मांड की सब शक्तियाँ, महादेव में उतर रहीं ।
।। 3 ।।

अधर्म सब मिटा रहें
लहू से अब नहा रहें ।
जिधर नजर घुमा रहें
उधर भूचाल ला रहें ।
सब मोच्छ देखो पा रहें
महादेव में समा रहें ।
नयें सृजन के वास्ते, तांडव प्रभु मचा रहें ।
।। 4 ।।

सब तांडव गाने लगे
प्रभु को मनाने लगे।
सर, देव झुकाने लगे
विष्णु को बुलाने लगे।
हरीयोम, हरि गाने लगे
महाकाल को समझाने लगे।
विष्णु को याचक देख, प्रभु तांडव भुलाने लगे ।।
।। 5 ।।

कलयुग की संतान

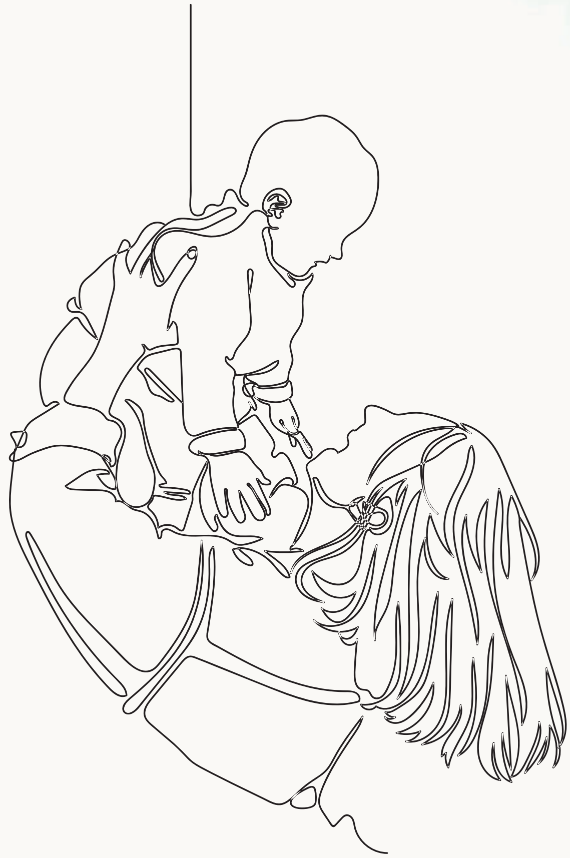

श्रीमती दीपा कुमारी
पत्नी–श्री सौरभ नाथानी
वित्त एवं लेखा अधिकारी

''माता–पिता'' ये दोनों ही ऐसे शब्द हैं जिसे सुनते ही कहने और सुनने वाले दोनों की आत्मा पवित्र हो जाती है। माता–पिता अपनी संतान के लिए भगवान होते हैं। उनके जन्म लेने से लेकर बड़े होने तक वे उनकी सभी जरूरतों का ध्यान रखते हैं।

माँ बच्चे को नौ माह अपने गर्भ में रखती है, पीड़ा सहती है, जन्म देती है, अपना दूध पिलाबर बड़ा करती है। वह खुद नहीं सोती लेकिन अपनी संतान को सारी रात जगकर सुलाती है। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर उसे यह आभास हो जाता है कि उसके बच्चे को क्या चाहिए।

अगर घर में एक रोटी हो और मॉ और बच्चे दोनों को भूख लगी हो तो मॉ पहले बच्चे को खिलाती है और खुद पानी पीकर रह जाती है।

पिता अपने बच्चों के लिए एक छायादार वृक्ष की तरह होता है। वह अपने बच्चों को दुःख और तकलीफों की कड़ी धूप से बचाने की कोशिश करता रहता है। वह अपने परिवार के लिए रोटी, कपड़ा

और मकान होता है। पिता परिवार का ऐसा स्तम्भ होता है जो अपने परिवार की सभी परेशानियों का बोझ अपने कंधे पर लादे रहता है।

संक्षेप में कहा जाय तो माता–पिता की ममता का वर्णन करना इंसान के बस की बात है ही नहीं।

सभी माता–पिता अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। और जब वह बच्चा एक कामयाब इंसान बन जाता है तो अपने मॉ–बाप को ही भूल जाता है। जिस मां ने अपनी जान से भी ज्यादा अपने संतान की देखभाल की हो, उसे एक छिंक आने पर भी सहम जाती हो आज वही बच्चा मॉ से कहता है तुमने मेरे लिए किया ही क्या है?

वह अपने माता–पिता को बुरा भला कहता है और उनका अपमान करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। इतना ही नहीं बातों ही बातों में वह घर छोड़ने की धमकी भी देता है। बेचारे माता–पिता डर से कुछ नहीं बोल पाते हैं।

कुछ दिनों के बाद उनकी शादी हो जाती है। अब वो माता–पिता जो कभी अपने घर के मालिक थे उनकी स्थिति एक ऐसे पुराने फर्निचर की तरह हो जाती है जो घर के किसी कोने में पड़े रहते हैं। हद तो तब हो जाती है जब माता–पिता का वह कोना भी उनके बच्चों को रास नहीं आता और उन्हें अपने ही घर से बाहर निकाल देते हैं और एक बार भी नहीं सोचते कि वो कहॉ जाएंगे? क्या करेंगे?

क्या होगा ऐसे ''कलयुग ही संतानों'' का जिनके दिलों में माता–पिता के लिए सम्मान ही नहीं है। ऐसे संतान को तो इंसान कहते हुए भी शर्म आती है।

अब एक सवाल आप सभी के लिए

क्या संतानों को अपने माता–पिता के साथ ऐसा ही करना चाहिए, क्या उन्हें यह हक बनता है कि जिन अंगुलियों ने उनको चलना सिखाया उन्हीं अंगुलियों को पकड़ कर उनको घर से बाहर निकाल दे?

अगर ऐसा ही चलता रहा तो इस कलयुग की संतान ''श्रवण कुमार'' जैसी संतान कभी नहीं बन सकती।

प्रीति चौधरी
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

राजस्थान की संस्कृति एवं कला-साहित्य

राजस्थान को सांस्कृतिक दृष्टि से भारत को समृद्ध प्रदेशों में गिना जाता है। संस्कृति एक विशाल सागर है जिसे सम्पूर्ण रूप से लिखना संभव नहीं हैं। संस्कृति तो गॉव–गॉव ढांणी–ढांणी चौपाल चबूतरों महल–प्रासादों में ही नहीं, वह तो घर–घर जन–जन में समाई हुई है। राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप रजवाड़ों और सामन्ती व्यवस्था में देखा जा सकता है, फिर भी इसके वास्तविक रूप को बचाए रखने का श्रेय ग्रामीण अंचल को ही जाता है, जहाँ आज भी यह संस्कृति जीवित हैं संस्कृति में साहित्य और संगीत के अतिरिक्त कला–कौशल, शिल्प, महल–मंदिर, किले–झोंपडियों का भी अध्ययन किया जाता है, जो हमारी संस्कृति के दर्पण है। हमारी पोशाक, त्यौहार, रहन–सहन, खान–पान, तहजीब–तमीज सभी संस्कृति के अन्तर्गत आते है। थोड़े से शब्दों में हा जाए तो "जो मनुष्य बनाती है, वह संस्कृति है।"

ऐतिहासिक काल में राजस्थान में कई राजपूत वंशों का शासन रहा है। यहाँ सभी शासकों ने अपने राज्य की राजनैतिक एकता के साथ–साथ साहित्यिक और सांस्कृतिक उन्नति में योगदान दिया है। ग्याहरवीं शताब्दी में उत्तर पश्चिम से आने वाली आक्रमणकारी जातियों ने इसे नष्ट करने का प्रयास किया, परन्तु निरन्तर संघर्ष के वातावरण में भी यहाँ साहित्य, कला की प्रगति अनवरत रही। मध्य काल में राजपूत शासकों के मुगलों के साथ वैवाहिक और मैत्री संबन्धों से दोनों जातियों में सांस्कृतिक समन्वय और मेल–मिलाप रहा कला, साहित्य में विविधता एवं नवीनता का संचार हुआ और सांझी संस्कृति का निर्माण हुआ।

सांझी संस्कृति

राजस्थान के भू–भाग पर आक्रमणों एवं युद्धों का दौर लम्बे समय तक चलता रहा। राजस्थानी जनजीवन में समन्वय एवं उदारता के गुणों ने सांझी संस्कृति को पनपने का अवसर प्रदान किया। धार्मिक सहिष्णुता के परिणामस्वरूप अजमेर में ख्वाजा मुइनुदीन चिश्ती की दरगाह में हिन्दु–मुस्लिम एकता के दर्शन होते हैं। जहाँ सभी धार्मिक लोग एकत्र होकर इबादत (प्रार्थना) करते हैं और मन्नत मांगते हैं। लोक देवता गोगाजी, रामदेवजी के समाधि स्थल पर सभी धर्मानुयायी अपनी आस्था रखकर साम्प्रदायिक सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। राजस्थान के सामाजिक जीवन यथा खान–पान, रहन–सहन, आमोद–प्रमोद और रस्मों–रिवाजों में सर्वत्र हिन्दु मुस्लिम संस्कृति का समन्वय हुआ है। भोजन में अकबरी जलेबी, खुरासानी खिचड़ी, बाबर बड़ी, पकौडी और मुंगड़ी का प्रचलन मुगली प्रभाव से खूब पनपा है। परिधानों में मलमल, मखमल, नारंग शाही, बहादुर शाही कपड़ों का प्रयोग हुआ है। आमोद–प्रमोद में पतंगबाजी, कबूतर बाजी मुगल काल से प्रचलित हुई है। स्थापना कला में हिन्दु–मुस्लिम शैलियों का सम्मिश्रण सांझी संस्कृति के उदाहरण हैं। यहाँ के राजा–महाराजाओं ने मुगली प्रभाव से स्थापत्य निर्माण में संगमरमर का प्रयोग किया। गेलेरियों, फव्वारों, छोटे बागों को महत्व दिया। दीवारों पर बेल बूटे के काम को बढ़ावा दिया। चित्रकला की विभिन्न शैलियों में मुगल शैली का प्रभाव सर्वत्र देखा जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि राजस्थानी कला एवं संस्कृति में सांझी संस्कृति के वे सभी तत्व मौजूद है जो अपने मूलभूत स्वरूप को बनाए रखते हुए भी नवीनता, ग्रहणशीलता, सहिष्णुता और समन्वय को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं।

मध्यकालीन साहित्यिक उपलब्धियाँ

राजस्थान में साहित्य प्रारम्भ में संस्कृत व प्राकृत भाषा में रचा गया। मध्ययुग के प्रारम्भकाल से अपभृंश और उससे जनित मरूभाषा और स्थानीय बोलियां जैसे मारवाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, ढूँढाड़ी और बागड़ी में साहित्य की रचना होती रही, परन्तु इस काल में संस्कृत साहित्य अपनी प्रगति करता रहा।

राजपूताना के विद्यानुरागी शासकों, राज्याश्रय प्राप्त विद्वानों ने संस्कृति का सृजन किया है। शिलाखों, लेखन, प्रषस्तियों और वंशावलियां के लेखन में इस भाषा का प्रयोग किया जाता था। महारणा कुम्भा स्वयं विद्वान प्रेमी एवं विद्वानों के आश्रयदाता शासक थे। इन्होंने संगीतराज, सूढ प्रबन्ध, संगीत मीमांसा, रसिक प्रिया, (गीत गोविन्द की टीका) संगीत रत्नाकर आदि ग्रन्थों की रचना की थी। इनके आश्रित विद्वान मण्डन ने शिल्पशास्त्र से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों रचना की। जिनमें दवेमूर्तिप्रकरण, राजवल्लभ, रूपमण्डन, प्रसादमण्डन महत्तवपूर्ण कुंभाकालीन (चित्तौड़गढ़) और कुंभलगढ़ प्रशस्ति (कुंभलगढ) की रचना की। राणा जगतसिंह एवं राजसिंह के दरबार में बाबू भट्ट तथा रणछोड़ भट्ट नामक विद्वान थे, जिन्होंने क्रमशः जगन्नाथराम प्रशस्ति और राजसिंह प्रशस्ति की रचनाएँ की। ये दोनों प्रशस्तियां मेवाड़ के इतिहास के लिए महत्तवपूर्ण है। आमेर–जयपुर के महाराजा मानसिंह, सवाईजयसिंह, मारवाड़ के महाराजा जसवन्तसिंह, अजमेर के चैहान शासक विग्रहराज चतुर्थ तथा पृथ्वीराज तृतीय बीकानेर के रायसिंह और अनूपसिंह

संस्कृत के विद्वान एवं विद्वानों के आश्रयदाता शासक थे। अनूपसिंह ने बीकानेर में "अनूप संस्कृत पुस्तकालय" का निर्माण करवाकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। विग्रहराज चतुर्थ ने "हरिकेलि नाटक लिखा, पृथ्वीराज के कवि जयानक "पृथ्वीराजविजय नामक काव्य के रचयिता थे। प्रतापगढ़ के दरबारी पंडित जयदेव का "हरिविजय" नाटक तथा गंगारामभट्ट का "हरिभूषण" इस काल की प्रसिद्ध रचनाएँ है। मारवाड़ के जसवन्तसिंह ने संस्कृत में भाषा–भूषण और आनन्द विलास नामक श्रेष्ठ ग्रंथ लिखा। मानसिंह का पुस्तकों से इतना प्रेम था कि उन्होंने काशी, नेपाल, आदि से संस्कृत के अनेक ग्रन्थ मंगवाकर अपने पुस्तकालय में सुरक्षित रखा। आज यह पुस्तकालय मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र के रूप में विख्यात है।

राजस्थानी साहित्य

राजस्थानी समस्त राजस्थान की भाषा रही है जिसके अन्तर्गत मेवाड़ी, मारवाड़ी, ढूढाडी, हाड़ौती, बागड़ी, मालवी और मेवाती आदि बोलियाँ आती है। इस भाषा में जैनशैली , चारणशैली, संतशैली और लोकशैली में साहित्य का सृजन हुआ है।

1. **जैनशैली का साहित्य–** जैनशैली का साहित्य जेन धर्म से सम्बन्धित है। इस साहित्य में शान्तरस की प्रधानता है। हेमचन्द्र सूरी, (ग्यारहवीं सदी) का देशीममाला, "शब्दानुशासन", ऋषिवर्धन सूरी का नल दमयन्ती रास, धर्म समुद्रगणि का "रात्रि भोजनरास" हेमरत्न सूरी का गौरा बादल री चैपाई प्रमुख साहित्य हैं।

2. **चारणशैली का साहित्य–** राजपूत युग के शैर्य तथा जनजीवन की झांकी इसी साहित्य की देन है। इसमें वीर तथा श्रृंगार रस की प्रधानता रही है। चारणशैली में रास, ख्यात, दूहा आदि में गद्य रचनाएँ हुई है। बादर ढाढी कृत "वीर भायण" चारण शैली की प्रारम्भिक रचना है। चन्दबरदायी का "पृथ्वीराजरासो" नेणसी की "नेणसीरीख्यात", बॉकीदास की "बॉकीदासरीख्यात, दयालदास की "दयालदासरी ख्यात" गाडण शिवदास की "अचलदास खींची री वचनिका प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनमें राजस्थान के इतिहास की झलक मिलती है। दोहा छनद में ढोलामारू रा दूहा प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त दुरसा आढ़ा का नाम भी विषिष्ठ उल्लेखनीय है। वह हिन्दू संस्कृति और शैर्य का प्रशसँक तथा भारतीय एकता का भक्त था। बीकानेर नरेष कल्याणमल के पुत्र पृथ्वीराज राठौड ने "वेलि क्रिसन रूकमणी री" नामक ग्रंथ की रचना की, जो राजस्थानी साहित्य का ग्रन्थ माना जाता है। इन गुणों की ध्वनि इसके गीतों, छन्दों, झुलका तथा दोहा में स्पष्ट सुनाई देती है। सूर्यमल्ल मीसण आधुनिक काल का महाकवि था और बून्दी राज्य का कवि था। इसने "वंश भास्कर" और "वीर सतसई" जैसी उल्लेखनीय कृतियों की रचना की।

3. **सन्त साहित्य–** राजस्थान के जनमानस का प्रभावित करने वाला सन्त साहित्य बड़ा मार्मिक है। संतों ने अपने अनुभवों का भजनों द्वारा नैतिकता, व्यावहारिकता को सरलता से जनमानस में प्रस्तुत किया है। ऐसे सन्तों में मल्लीनाथजी, जांभो जी, जसनाथ जी, दादू की वाणी, मीरा की "पदावली" तथा "नरसीजी रो माहेरो", रामचरण जी की "वाणी" आदि संत साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

4. **लोक साहित्य**– लोक साहित्य में लोकगीत, लोकगाथाएँ, प्रेमगाथाएँ, लोकनाट्य, पहेलियाँ, फड़ें तथा कहावतें सम्मिलित है। राजस्थान में फड़ बहुत प्रसिद्ध है। फड़ चित्रण वस्त्र पर किया जाता है। जिसके माध्यय से किसी ऐतिहासिक घटना अथवा पौराणिक कथा का प्रस्तुतिकरण किया जाता है। फड़ में अधिकतर लोक देवताओं यथा पाबूजी देवनारायण, रामदेवजी इतयादि के जीवन की घटनाओं और चमत्कारओं का चित्रण होता है।

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियाँ

1. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
– महात्मा गांधी

2. भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। – नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)

3. भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।
– अमित शाह (गृह मंत्री)

4. हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।
– मदन मोहन मालवीय

5. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है। – पुरूषोत्तम दास टंडन

6. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है। – सुमित्रानंदन पंत

7. हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। – डॉ सम्पूर्णानन्द

8. भारतीय भाषाएँ नदियां हैं और हिंदी महानदी। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

9. हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। – मौलाना हसरत मोहानी

10. हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। – स्वामी दयानंद

11. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।
– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

12. वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक–ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है। – पीर मुहम्मद मूनिस

13. देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। – रविशंकर शुक्ल

14. हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया। – डॉ राजेन्द्र प्रसाद

15. आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। – महावीर प्रसाद द्विवेदी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

ओएनजीसी विदेश लिमिटेड

टॉवर बी, दीनदयाल ऊर्जा भवन
नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110070
फोन : +91–11–26129344 फैक्स : +91–11–26129345
वेबसाइट : www.ongcvidesh.com